तीर्थयात्रा के लिए विहारो का महत्व बढने से शहरो का विहार बढने लगा और छोटे छोटे गांवो मे से घर बंध हो जाने से सभी लोग शहरो में पहोंच गए और विहार चालु के चालु रहे, जिस से रसोई घर की व्यवस्था का उपयोग करके भी साधु-साध्वीजी का विहार आगे बढाने का अनिवार्य बन गया। जिसके कारण तीर्थयात्रा टीक गई लेकिन संयम यात्रा घिसके अेकदम क्षीण बन गई।

यह सभी परिस्थिति दु:खद होने के बावजूद इस परिस्थिति मेसे बहार नीकलना अति जरुरी और अनिवार्य बन गया। बहार नीकले तोही घन्ना अणगार, शालिभद्र और ढंढणमुनि विगेरे मुनि भगवंतो के संयम के आंशिक मस्ती का अनुभव साधु-साध्वीजी के लिए शक्य बन सकेगा।

विहार मार्गदर्शिका पुस्तक मुख्यतया साधु-साध्वीजी के लिए ही उपयोगी बने ऐसी शक्यता है। इसीलिए इस की प्रस्तावना भी साधु-जीवन के असलीयतका बयान करे ऐसी अनिवार्यता बनी रहने के कारण ही मैने नवकल्पी विहार की बाते बताई है। इस पुस्तिका के प्रकाशन में भगिनी बेलडी, पू. डॉ. सा.श्री हर्षरत्ना श्री जी म.सा. एव पू.सा.श्री दर्शरत्नाश्रीजी म.सा. का प्रयास बहुत ही प्रशंसनीय व अनुमोदनीय है।

''शुभास्ते संन्तु पन्थान''

प.पू.शासन प्रभावक आ. देवश्री
देवचन्द्र सागरसुरि म.सा.
चरण किंकर गणि दिव्यचन्द्र सागर मा.सु.प
इत्यादी उपाश्रय, नागपुर